रेल जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाता कलात्मक टेबल कैलेंडर

अपनी लोकप्रिय गृह पत्रिका 'रेल दर्पण' की उच्चस्तरीय गुणवत्ता के लिए पिछले दिनों महामहिम राष्ट्रपति महोदया के हाथों भारत सरकार द्वारा प्रदत्त देश की सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका का प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार पाने वाली तथा विभिन्न महत्त्वपूर्ण अवसरों पर लगाई जाने वाली प्रदर्शनियों में हिंदी काव्य विधा के सुरुचिपूर्ण प्रयोग में उल्लेखनीय सफलता पाने वाली पश्चिम रेलवे ने नूतन वर्ष 2012 के लिए रेल जीवन के विभिन्न पहलुओं को रोचक काव्यात्मक विवरण के साथ बखूबी दर्शाता टेबल कैलेंडर प्रकाशित कर सृजनात्मक उत्कृष्टता की एक और अनूठी मिसाल पेश की है।

इस आकर्षक कैलेंडर की खासियत यह है कि इसमें एक कॉपीरेट कैलेंडर के उच्च स्तर को बनाये रखते हुए चित्रकला और साहित्य की काव्य सृजन विधा का अद्भुत संयोजन किया गया है। कैलेंडर के 12 पन्नों वाले कुल 12 पृष्ठों पर रेलवे से सम्बंधित जनजीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़े आकर्षक रेखाचित्र दर्शाये गये हैं, जिनमें जनवरी के पृष्ठ पर उपनगरीय स्टेशन पर अपनी रोजी-रोटी कमाने वाले डिब्बे वालों, बूट पॉलिश वालों, मछली वाली महिलाओं और कैंटीन वालों की चहल-पहल दिखाई गई है, वहीं फरवरी के पृष्ठ पर समय की पाबंदी के महत्त्व को बखूबी प्रतिपादित किया गया है। मार्च के पृष्ठ पर लोकल ट्रेन के यात्रियों को आपस में अच्छा बर्ताव करने के सफ़र को खुशनुमा बनाने की सलाह दी गई है, तो अप्रैल के पृष्ठ पर ट्रेनों में गंदगी फैलाने वालों को प्यार से समझाने की ज़रूरत पर बदल दिया गया है। मई महीने के पृष्ठ पर रेलवे स्टेशन पर स्थित प्रतीक्षालय का नज़ारा दर्शाकर इंतज़ार के पलों का भी आनंद उठाने का संदेश दिया गया है, तो जून का पृष्ठ अपने सहयात्री की सहूलियत का भी पर्याप्त ध्यान रखने की अच्छी बात सिखाता है। जुलाई का पृष्ठ बैटरी चालित कार जैसी नवीनतम तकनीक के ज़रिये वरिष्ठ नागरिकों और अपंग यात्रियों को बेहतर सुविधाएँ सुलभ कराने हेतु रेलवे के प्रयासों को दर्शाता है, वहीं अगस्त के पृष्ठ पर आगाह किया गया है कि किसी अजनबी सहयात्री से खाने-पीने की कोई वस्तु स्वीकार कर अपनी जान को जोखिम में न डालें। सितम्बर का पृष्ठ मुंबई महानगर की सबसे बड़ी सार्वजनिक समस्या 'ट्रेसपासिंग' को समर्पित है, जिसमें पटरी पार करके अपनी अनमोल ज़िंदगी गँवाने का खतरा मोल नहीं लेने की उपयोगी सलाह दी गई है। अक्टूबर का पृष्ठ ट्रेन छूट जाने पर निराश न होने की अच्छी सलाह को जीवन की हकीक़त से जोड़ते हुए कहता है - 'जीवन में और भी कई आयेंगे अवसर, निराश न हों, भविष्य हो सकता है बेहतर !' नवम्बर के पृष्ठ पर रेलगाड़ी हमसे कहती है - 'सही डगर पर हमेशा रखें निगाह : मुश्किल चुनौतियों में भी आसान होगी राह ! दिसम्बर का अंतिम पृष्ठ सुरंग से बाहर निकलती रेलगाड़ी के उल्लास को शानदार अभिव्यक्ति प्रदान करते हुए ज़िंदगी का फलसफा कुछ यूँ बयान करता है :- 'हर अंधेरी सुरंग के अंत में तय है रोशन आसमान : नई शुरुआत के साथ तय है अरमानों की उड़ान ! इन सभी पृष्ठों पर प्रदर्शित रेखाचित्रों के भावों के अनुरूप प्रभावशाली पंक्तियाँ हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में दी गई हैं, जिनसे हर पृष्ठ पर एक सार्थक समपूर्णता का खुशनुमा एहसास होता है। हर टेबल कैलेंडर की तरह इसमें भी तमाम तारीखों और अवकाशों को सलीके से दर्शाया गया है, वहीं आवरण पृष्ठ पर कैलेंडर की संकल्पना 'ज़िंदगी है एक सफ़र ... !' का ज़िक्र करते हुए लिखा गया है कि पूरी दुनिया में गतिशीलता और प्रगति का पर्याय मानी जाने वाली रेलवे के लिए आम आदमी हमेशा प्रेरणा का स्रोत रहा है। आम आदमी के दैनिक जीवन और ट्रेन की यात्रा में अनेक समानताओं का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि हमने इस कैलेंडर में रेलवे से जुड़े जनजीवन के कुछ नायाब लम्हों और अभिन्न पहलुओं को शब्दों एवं तस्वीरों के ज़रिये बयान करने की कोशिश की है। मानना होगा कि यह कोशिश सचमुच बेहद कामयाब रही है और इस कलात्मक बानगी की शानदार पेशकश के लिए पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री महेश कुमार और मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री शरत चंद्रायन हार्दिक बधाई के पात्र हैं।

विभिन्न प्रमुख अखबारों में प्रकाशित समीक्षा

पश्चिम रेलवे की राजभाषा कार्पोरेट फिल्म सुपरहिट

बॉलीवुड की अनेक सुपरहिट फिल्मों के लिए अपनी रेलगाड़ियों और रेल परिसरों में शूटिंग की अनुमति देने वाली पश्चिम रेलवे द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के बारे में निर्मित कॉर्पोरेट फिल्म सुपरहिट साबित हुई है और सूचना प्रौद्योगिकी के ज़रिये इसे पूरी दुनिया के हिन्दी प्रेमियों द्वारा काफी सराहा जा रहा है। पश्चिम रेलवे के जनसम्पर्क विभाग द्वारा तैयार की गई लगभग 7 मिनट की अवधि वाली इस कॉर्पोरेट फिल्म में पश्चिम रेलवे के विभिन्न कार्यालयों, रेलगाड़ियों एवं रेल परिसरों में किये जाने वाले राजभाषा हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग को बड़े ही कलात्मक एवं प्रभावशाली ढंग से दर्शाया गया है। 'राजभाषा की डगर पर जारी है पश्चिम रेल का सफर' शीर्षक से तैयार इस सुरुचिपूर्ण कॉर्पोरेट फिल्म का पहला प्रदर्शन जनवरी के पहले सप्ताह में मुंबई के दौरे पर आई संसदीय राजभाषा उपसमिति के साथ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की महत्त्वपूर्ण बैठक के अवसर पर किया गया, जिसमें प्रभारी कार्यालय पश्चिम रेलवे के अलावा केन्द्र सरकार के 14 अन्य कार्यालयों के प्रमुख मुंबई स्थित अधिकारी शामिल हुए। इस अवसर पर संसदीय उपसमिति के उपाध्यक्ष श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी सहित सभी सदस्यों और अन्य सहभागी अधिकारियों द्वारा पश्चिम रेलवे की राजभाषा कॉर्पोरेट फिल्म को मुक्त कंठ से सराहा गया। इस फिल्म में पश्चिम रेलवे के दैनिक कामकाज में हिन्दी भाषा के प्रयोग को बखूबी दर्शाने के साथ-साथ यात्रियों के लिए रेल परिसरों में प्रदर्शित महत्त्वपूर्ण हिन्दी सूचनाओं तथ प्रदर्शनी, रेल दर्पण पत्रिका तथा अखबारों में सामाजिक जागरूकता सम्बंधी विज्ञापनों सहित विभिन्न सृजनात्मक माध्यमों के ज़रिये राजभाषा को दिये जाने वाले प्रोत्साहन की सुरुचिपूर्ण जानकारी भी प्रभावशाली एवं रोचक ढंग से दी गई है। भाषा को सम्प्रेषण का प्रमुख माध्यम बताते हुए फिल्म में कहा गया है कि भाषा जब हाथ मिलाती है, तो दोस्ती का पैगाम देती है। भाषा जब ज्ञान भंडार बन जाती है, तो हम बहुत कुछ सीखते हैं, मगर जब भाषा खामोश रहती है, तो उसकी खामोशी भी बहुत कुछ कह जाती है। सबसे अंत में बड़ी ही सार्थक संदेश दिया गया है कि 'जनभाषा हिंदी है हमारी राजभाषा, मगर हम चाहते हैं कि यह सच्चे अर्थों में बन जाये, हमारी राष्ट्रभाषा।' इस शानदार फिल्म को पश्चिम रेलवे की अधिकृत वेबसाइट तथा यू ट्यूब पर अपलोड किया गया है, ताकी पूरी दुनिया के हिंदी प्रेमी इसे देख सकें। सूचना प्रौद्योगिकी के इस सशक्त माध्यमों के ज़रिये इस फिल्म को व्यापक तौर पर सराहा जा रहा है और बड़ी संख्या में लोगों ने इस फिल्म के अच्छे पहलुओं पर सकारात्मक टिप्पणियाँ की है। देश की सर्वश्रेष्ठ गृह पत्रिका के रूप में अपनी 'रेल दर्पण' पत्रिका के लिए महामहिम राष्ट्रपति महोदया के हाथों सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार पाने वाली पश्चिम रेलवे के जनसम्पर्क विभाग द्वारा राजभाषा कॉर्पोरेट फिल्म का निर्माण करके एक और गौरवपूर्ण उपलब्धि हासिल की गई है और इसके लिए पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री महेश कुमार एवं मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री शरत चन्द्रायन सहित उनकी समूची टीम हार्दिक अभिनंदन की हकदार है।

राजभाषा की डगर पर जारी है पश्चिम रेल का सफर